International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582–2160, Volume: 4, Issue: 4, July-August 2022

प्राथमिक शिक्षा एवं ग्रामीण स्कूल का वर्तमान परिदृश्य

विभाकर उपमन्यु

शोधछात्र
निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

संक्षेप

प्रस्तुत शोध लेख विभिन्न साहित्य की समीक्षा के आधार पर प्रस्तुत किया गया है इस शोधपत्र में प्राथमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति का वर्णन किया गया है। प्रजातंत्रात्मक शासन व्यवस्था में शिक्षा राष्ट्र की आधारशिला का कार्य करती है। विगत दशकों से भारत में प्राथमिक शिक्षा के पुनर्गठन और पुनरुद्धार के लिए सक्रियता बढ़ी है। किंतु दुर्भाग्यवश शिक्षा के मात्रात्मक प्रसार एवं प्रचार में उल्लेखनीय प्रगति के साथ-साथ शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर निम्न होता जा रहा है। देश के ज्यादातर शिक्षाविदों व बुद्धिजीवियों ने प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में तत्काल सुधार की आवश्यकता बल दिया, जो नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा दे सकें और भविष्य में बढ़ती कौशल आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। शिक्षा की गुणवत्ता को कायम रखने के लिए इन सभी उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करना होगा।

प्राथमिक शिक्षा ही किसी व्यक्ति के जीवन की वह नींव होती है जिस पर उसके संपूर्ण जीवन का भविष्य व्यतीत होता है। प्राथमिक शिक्षा ज्ञान का नियम है, इसमें ज्ञान और सूचना के प्रारंभिक तत्व शामिल हैं। जिन्हें बच्चों को परोसा और सिखाया जाता है। एक बच्चा बचपन के दौरान एक कोरे कागज की तरह होता है और इस दौरान इंसान का दिमाग अपने सुपर एक्टिव रूप में होता है। यह वैज्ञानिक रूप से साबित हो चुका है पहले 5 वर्षों में बच्चों के सभी साइको मीटर, कौशल, संज्ञानात्मक व भावनात्मक, सामाजिक और सीखने के कौशल अपने सबसे अच्छे रूप में विकसित होते हैं। देश की एक बड़ी आबादी सरकारी स्कूलों के ही सहारे हैं। सरकारी नियंत्रण वाले प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में न तो शिक्षा का स्तर सुधार पा रहा है और न ही इनमें विद्यार्थियों को बुनियादी सुविधाएं मिल पा रही है। निम्न मध्यम वर्ग और आर्थिक रूप से सामान्य स्थिति वाले लोगों के बच्चों के लिए सरकारी स्कूल ही शिक्षा प्राप्त करने का एकमात्र जरिया है फिर वह चाहे कैसे भी हों ? इन स्कूलों में न तो योग्य अध्यापक हैं और न ही मूलभूत सुविधाएं। इन स्कूलों में पढ़ाई लिखाई की असलियत स्वयंसेवी संगठन प्रथम की हर साल आने वाली रिपोर्ट बताती है, रिपोर्ट के मुताबिक कक्षा चार या पांच के बच्चे अपने से निकले कक्षा की किताबें तक नहीं पढ़ पाते।

शब्द कुँजी: प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा व्यवस्था, शिक्षण गुणवत्ता, नवाचार, निजीकरण एवं उत्तरदायित्व

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की धुरी है जिस पर उसके विकास का चक्र घूमता है। राष्ट्र जनों की मानसिक क्षितिज का विस्तार देखकर उनकी प्रत्येक क्षेत्र के कार्य में सक्षम बनाना शिक्षा का उपहार है। शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है यह बहुआयामी उद्देश्य पूर्ण प्रक्रिया है। बच्चों के साथ पूरे राज्य का भविष्य उचित शिक्षा प्रणाली पर टिका है। अब तक सरकारों द्वारा यूनिफॉर्म किताबें उपलब्ध कराने स्कूल भवनों के निर्माण व नवीनीकरण और हर बच्चे को मिड डे मील प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। किंतु शिक्षा व्यवस्था की विडंबना यह है कि प्राथमिक स्तर पर भारी कमी है। बहुतों स्कूल ऐसे हैं जो केवल एक शिक्षक के सहारे चल रहे हैं। राज्य सरकार व आला अधिकारियों को पूरी स्थिति की जानकारी होने के बावजूद अभी भी कोई स्थाई समाधान नहीं खोज पाई है। प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला है। बालक के उज्ज्वल शैक्षिक भविष्य के निर्माण में प्राथमिक शिक्षा की विशेष भूमिका होती है। यह मानव मात्र के विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा से पहले दी जाने वाली शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा कहते हैं प्राथमिक शब्द का सामान्य अर्थ है - प्रारम्भिक, मुख्य तथा आधारभूत। प्रारम्भिक स्तर पर सम्पन्न होने के कारण प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधार है।

शिक्षा वैज्ञानिक जीन पियाजे के अनुसार बालक द्वारा अर्जित ज्ञान के भंडार का स्वरूप विकास की प्रत्येक अवस्था में बदलता है और परिमार्जित होता रहता है। शिक्षा के उद्देश्य के बारे में अपने विचार रखते हुए पियाजे ने लिखा था, शिक्षा का सबसे प्रमुख कार्य ऐसे मनुष्य का चयन करना है, जो नए कार्य करने में सक्षम हो न कि अन्य पीढ़ियों के कामों की आवृत्ति करना। शिक्षा से सृजन खोज और आविष्कार करने वाले व्यक्ति का निर्माण होना चाहिए। आज प्राथमिक विद्यालयों का यदि सर्वांगीय अवलोकन करें तो हम पाते हैं कि प्राथमिक विद्यालय बच्चों और अभिभावकों को प्रोत्साहित करने का माध्यम न होकर हतोत्साहित करने का केंद्र हो गया है। पब्लिक स्कूल दूसरी प्रकार की हीनता का माध्यम बन रहे हैं, केवल भाषा की दृष्टि से ही नहीं वरन संसाधनों की दृष्टि से भी। यदि नींव के स्तर पर ही बच्चों में नफरत और हीनता का मिट्टी-गारा भर दिया जाएगा, तो भवन का निर्माण कैसे होगा ? हमें मैकाले के शैक्षिक विचारों वाली सोच से बाहर निकलना होगा, तभी शैक्षिक समस्या का समाधान हो सकता है। पब्लिक व सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता की तुलना करने से बेहतर यह होगा कि हम इस विषय पर सोचें की प्राथमिक शिक्षा किस तरह की हो, उसका उद्देश्य क्या हो? उसकी आवश्यकता और जरूरतें क्या हैं ? प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य वैश्वीकरण का पोषण है या आने वाली पीढ़ी को आत्मनिर्भरता और समानता की ओर ले जाना। इस पर चर्चा सार्वजनिक रूप से होनी चाहिए, आज की शिक्षा राजनीतिक हो गई है जबकि शिक्षा राजनीतिक नहीं है और न ही जरूरत की पूर्ति के लिए उत्पाद बढ़ाने का जरिया। सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा योजना के अंतर्गत शिल्प केंद्रत या कार्यानुभव शिक्षा मातृभाषा शिक्षा, जीवन उपयोगी शिक्षा, क्रिया आधारित शिक्षा, स्वावलंबन हेतु शिक्षा, नि:शुल्क शिक्षा एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा, बच्चों के पोषण हेतु पोषाहार की व्यवस्था है।

शिक्षा का निजीकरण

आज के दौर में अंग्रेजी भाषा की मांग दिनों-दिन बढ़ती जा रही है और अभिभावक अपने बच्चों को अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करने के लिए निजी विद्यालयों की तरफ देख रहे हैं। प्राथमिक शिक्षा का दायित्व स्थानीय निकायों को प्राप्त है। शिक्षा के निजीकरण ने एक ओर सरकार को शिक्षा के दायित्व से मुक्त किया है लेकिन दूसरी वह निजी संस्थानों के शिक्षा को व्यवसाय बनाने की स्वतंत्रता भी मिल गई है, जो कि शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। वर्तमान में अच्छे निजी संस्थानों का अभाव है जो कि शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। वर्तमान में अच्छी निजी संस्थानों का अभाव है जो कि शिक्षा के सभी मानकों पर सफल हों। कुछ अपवादों को छोड़ दें तो अधिकांश निजी विद्यालय मातृ परीक्षा उत्तीर्ण करने के केंद्र बनकर रह गए हैं। आर्थिक लाभ के लिए यहां न तो योग्य शिक्षकों को नियुक्त किया जाता है और न ही छात्रों को शिक्षा के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह किया जा रहा है। कई विद्यालय ऐसे हैं जहां अप्रशिक्षित अध्यापकों से शिक्षण कार्य कराया जाता है और कुछ शिक्षकों की योग्यता शून्य होती है। ऐसे में शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाना संभव नहीं हो सकता।

शिक्षा का उत्तरदायित्व

छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का उत्तरदायित्व किसका है यह प्रश्न अनुत्तरित है सभी गुणवत्ता के प्रश्न पर एक-दूसरे पर उत्तरदायित्व डालते हैं। बालक को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का उत्तरदायित्व अभिभावक का है, जिन से सहयोग की अपेक्षा की जाती है या शिक्षक का है जो कि छात्र के भविष्य का निर्माता है अथवा स्वयं छात्र को जिम्मेदार होना चाहिए या फिर सरकार पर ही सारा उत्तरदायित्व है, क्योंकि उस पर ही शिक्षा की आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने का भार है। सभी के उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करके शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सकता है। प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखने में सबसे बड़ी बाधा दायित्व का बोध ना होना है। शिक्षा गुणवत्ता के लिए किसी एक को उत्तरदायी ठहराना उचित नहीं है। शिक्षक, परिवार, समाज व सरकार यह सभी समान रूप से शिक्षा में योगदान देते हैं। अतः सभी को उत्तरदायित्व के प्रति जागृत कर शिक्षा की गुणवत्ता को कायम किया जा सकता है।

ग्रामीण स्कूलों की कार्यप्रणाली

ग्रामीण सरकारी स्कूलों में किस तरह कि शिक्षा प्रदान की जा रही है। क्या हम स्कूल में बच्चों का दाखिला और मध्यान भोजन के आंकड़ों को शिक्षा की सफलता मान रहे हैं और स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता को भूल गए हैं, क्या सिर्फ खुद का नाम लिख लेना ही न्यूनतम स्तर पर पढने और गणित के सामान्य सवालों को हल करने की योग्यता ही शिक्षा मान लिया जाना चाहिए। आंकड़ों के विश्लेषण से यह भी पता चलता है कि यदि आधारभूत कौशल शुरुआत में ही अच्छी तरह नहीं सीख लिया जाता तो बाद में उन्हें नहीं सीखा जा सकता। सरकारी स्कूलों में शिक्षा व्यवस्था की हकीकत यही है कि बहुत सारे बच्चे शिक्षण

संस्थान का हिस्सा बनकर भी शिक्षित नहीं हो पाए, जो हमारी शिक्षा व्यवस्था की नाकामी है। इस तरह जो बच्चे प्राथमिक और माध्यमिक तौर पर उत्तर नहीं हो पाए वैसे एक अच्छे समाजवाद राष्ट्र में योगदान दे सकते हैं। यह एक ऐसी गंभीर समस्या है। जिसका समाधान किया जा सकता बशर्ते हम इसकी गंभीरता समझे वह हमारी सरकार भी इसके समाधान में सहयोग दें इस समस्या के साथ कोई विशेष जाना पहचाना चेहरा जुड़ा हुआ नहीं है और हमारी कथित बौद्धिक बहस राजनीतिक और व्यक्तिगत आधारित हो गई है। इस कारण हम इसकी ज्यादा परवाह नहीं करते और मीडिया भी इसकी उपेक्षा करता है। वास्तविक रूप में यह समाज और राष्ट्र के लिए सबसे प्रमुख मुद्दा है। यदि समाज और सरकार इस समस्या का समाधान समय रहते नहीं करता है तो अगले कुछ सालों में हमारे सामने लाखों भूखे और बेरोजगार युवा होंगे, जिनके पास न तो कोई योग्यता होगी और न ही दुनिया के बारे में शिक्षित होने से आया कोई नजरिया होगा। अच्छे समाज और उन्नत राष्ट्र के सपनों को पूरा करने के लिए हमें ग्रामीण शिक्षा में सुधार करना ही होगा। ग्रामीण परिवेश में विद्यालय की व्यवस्था में सुधार है लेकिन इसे और सुधार की ओर ले जाने की आवश्यकता है। विद्यालय में विद्यार्थियों का नामांकन करा दिया जाए तब भी विद्यार्थियों का विद्यालय में अनुपस्थित रहने की समस्या बनी रहती है। इसके अलावा अभिभावकों के अशिक्षित एवं कम पढ़े लिखे होने के कारण वह विद्यालय आने में लज्जा महसूस करते हैं। इस समस्या का समाधान सामुदायिक जागरूकता के माध्यम से किया जा सकता है। इसलिए विद्यालय में समय-समय पर जागरूकता संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन अभिभावकों का सम्मान एवं सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी अभिभावकों को देना चाहिए, जिससे विद्यालय एवं समुदाय की खाई को समाप्त किया जा सके।

शिक्षा में नवाचार

शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए शिक्षा में नवाचारों की आवश्यकता है। बाल-संसद, अभिनव उक्त शिक्षण, छात्र-प्रोफाइल, खेल-खेल में शिक्षा, सामुदायिक सहभागिता, सरल अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम एवं कॉन्सेप्ट मेपिंग आदि नवाचार से आशय है। नवाचार कम से कम खर्च पर विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों का अधिक से अधिक प्रयोग कर शिक्षा में गुणवत्ता लाना है। योग्य शिक्षक और छात्र के मध्य सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करना विद्यार्थियों में रचनात्मकता का सृजन एवं शिक्षा को रुचिकर एवं सरल बना कर विद्यार्थियों को अधिकतम के लिए प्रेरित करना। प्राथमिक स्तर में प्रचलित विषय वस्तु विद्यार्थियों को सीखने के लिए उत्प्रेरित नहीं कर पा रही। इसका कारण पुरानी विषय वस्तु का प्रयोग करना इसमें किसी तरह के बदलाव को अभी तक सुनिश्चित नहीं किया गया जो एक बड़ी समस्या है। विद्यालय में अधिगम एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन शिक्षक के मार्गदर्शन में किया जाता है लेकिन विद्यार्थियों में नेतृत्व कौशल, योग्य नागरिक एवं समस्त समाधान कौशल का विकास करना है, तो उन्हें स्वयं इन सभी गतिविधियों को करने का अवसर देना चाहिए। इसके लिए सबसे उपयुक्त मंच बाल संसद है। इससे विद्यार्थियों में शिक्षण प्रक्रिया के प्रति सक्रियता बनी रहती है और वह किसी समस्या का समाधान स्वयं करने में सक्षम होते हैं। स्वाभाविक रूप से विद्यार्थियों का जीवन खेलकूद के लिए होता है विद्यार्थियों की गतिविधियां उनके परिवेश एवं रोज पर निर्भर करती हैं। यदि गणित एवं विज्ञान जैसे विषयों को खेल-खेल में पढ़ा जाए, तो वह इन विषय को सरलता से सीख एवं आत्मसात कर सकते हैं। इससे विद्यार्थियों की एकाग्रता में वृद्धि होगी तथा खेल भी द्वारा शिक्षण प्रक्रिया रोजगार एवं सरल बनेगी। विद्यार्थियों की अरुचि एवं पाठ पुस्तक को समझने की अक्षमता को दूर करने के लिए पाठ्यक्रम में नवीनतम दृष्टिकोण को सम्मिलित करने की आवश्यकता है। अभिनय शिक्षण विधि इस स्थिति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यह विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न करती है। गणित के पाठ के समय विद्यार्थियों को दो वर्गों में बैठकर बालकों को सम संख्या के क्रम में एवं बालिकाओं को विषम संख्या के क्रम में बैठाया जा सकता है। इससे विद्यार्थियों को संख्याओं का ज्ञान आसानी से कराया जा सकता है एवं विषय वस्तु के प्रति विद्यार्थियों की रुचि भी बनी रहती है। विद्यार्थियों में रचनात्मकता, अभिव्यक्ति, कला, संस्कृति व साहित्य के प्रति रूचि देश-विदेश की स्थिति से परिचित होने के लिए बाल अखबार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से पठान एवं लेखन कौशल का विकास होता है। जो कमजोर विद्यार्थियों को पढ़ने व लिखने में सहायता एवं आत्मविश्वास उत्पन्न करता है। विद्यालयों में बहुत सी ऐसी विषय वस्तु होती है, जिसे आसानी से याद नहीं किया जा सकता। जैसे - विज्ञान इसे पढ़ने के लिए कांसेप्ट मैपिंग का प्रयोग किया जा सकता है। इसका शाब्दिक अर्थ है, जिसमें मुख्य सांकेतिक शब्दों के माध्यम से वैचारिक आरक्षित रद्द किया जाता है। यह विद्यार्थियों के लिए श्रेष्टतम विधि है।

निष्कर्ष

राष्ट्र का उन्नति एवं विकास चाहते हैं तो शिक्षा के बदलते स्वरूप को स्वीकार करना होगा। वह बच्चे की उसकी अभिरुचि के अनुसार शिक्षा प्रदान करनी होगी। प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर नहीं सुधारा गया, तो हमारे पास अयोग्य एवं बेरोजगार युवाओं की फौज और वैश्वीकरण के इस दौर में हमारा समाज और राष्ट्र पीछे पड़ जाएगा। स्कूली शिक्षा को इस तरह विकसित करना होगा कि वह विद्यार्थी में आंतरिक व मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को पैदा करें। वर्तमान समय में एक सामान्य व्यक्ति की अवधारणा बन गई है कि सरकार द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी कभी उन्नत के उत्कर्ष पर नहीं पहुंच पाएंगे। इस भ्रांति को दूर करने के लिए हमें स्वयं जिम्मेदारी लेनी होगी। हमें एक अच्छा नेतृत्वकर्ता बनना होगा। सरकार द्वारा चलाई जा रही शैक्षिक योजनाओं की समय – समय पर समीक्षा एवं सुझाव लेनी चाहिए। शिक्षा व्यवस्था में नवाचार और गुणवत्ता में सुधार करने के लिए अध्यापक प्रशिक्षण, माडल विद्यालय, नवाचार, योग्य अध्यापकों की उपलब्धता एवं अध्यापक सिर्फ शिक्षण कार्य के लिए व्यवस्था और शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

संदर्भग्रंथ

1. मदन मोहन एवं मालती सारस्वत, भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ।
2. त्यागी गुरुसरन दास, भारतीय शिक्षा का परिदृश्य।
3. अग्रवाल जे. सी., भारत में प्राथमिक शिक्षा।
4. सिंह जगदम्बा, शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण के प्रभाव का औचित्य।
5. मिश्र गिरीश्वर,सामाजिक दायित्व की समीक्षा, आपकी बात।
6. डॉ श्रीवास्तव प्रवीन चन्द्र, प्रारंभिक शिक्षा के मूलभूत तत्व।
7. अरविंदो सोसाइटी २०१८
8. अग्निहोत्री एवं अन्य २०१४
9. मंगल एवं अन्य २०१५
10. मंगल एवं अन्य २०१५
11. बिर्बिली २००६

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582–2160, Volume: 4, Issue: 4, July-August 2022

Current Scenario of Primary Education and Rural School

Vibhakar Upamanyu

Research Scholar
Nirwan University, Jaipur, Rajasthan, India

Abstract
The research article presented has been presented on the basis of review of various literature. In this paper, the current status of primary education is described. In the democratic governance system, education works as the foundation stone of the nation. For the past decades, activism has increased for restructuring and revival of primary education in India. But unfortunately, along with remarkable progress in quantitative spread and publicity of education, the level of quality of education is becoming low. Most of the academics and intellectuals of the country emphasized the need for immediate improvement in primary education system, which can promote innovation and entrepreneurship and fulfil the growing skills requirements in the future. To maintain the quality of education, all these responsibilities have to be ensured. Primary education is the foundation of a person's life on which the future of his entire life is spent. Primary education is the rule of knowledge, it includes early elements of knowledge and information. Those who are served and taught children. A child is like a blank paper during childhood and during this time the mind of a human being is in his super active form. It has been proved scientifically. In the first 5 years all the psycho meters of children, skills, cognitive and emotional, social and learning skills develop into their best form. A large population of the country is with the help of government schools. government regulation In primary and secondary schools, neither the level of education is being improved nor the students are getting basic facilities. Government schools are the only way to get education for children of lower middle class and economically normal status, no matter what they are? These schools have neither qualified teachers nor basic facilities. The reality of writing in these schools tells the report of the voluntary organization I every year, according to the report, according to the report, children of class four or five are unable to read even the books of classes.

Keywords: Primary Education, Education System, Education Quality, Innovation, Privatization and Responsibility

Preface

Education is the axis of any nation on which the cycle of its development revolves is Seeing the expansion of the mental horizon of the nation people is a gift of education to enable them to work for each field. Education is a dynamic process. It is a multidimensional purpose. The future of the entire state with children rests on the proper education system. Till now, the governments have focused on construction and renewal of school buildings to provide uniform books and provide mid-day meal to every child. But the irony of education system is that there is a huge shortage at the primary level. There are many schools that are running only with the help of a teacher. Despite knowing about the whole

situation, the state government and top officials have still not been able to find any permanent solution. Primary education is the cornerstone of the entire education system. Boy Primary education has a special role in building a bright educational future. It paves the way for the development of human beings. Education given before education is called primary education. The primary word is the general meaning - initial, main and basic. Due to the completion of the initial level, primary education is the basis of the entire education system. According to the education scientist Jean Piage, the form of the store of knowledge acquired by the child changes in every stage of development and keeps on circulating. Keeping his views about the objective of education, Piaja wrote, the most prominent work of education is to choose a person who is able to do new tasks and not to frequency the works of other generations. Creation search from education and The person inventing should be constructed. Today, if we make all-round observations of primary schools, then we find that the primary school has become the centers of discouraging rather than the medium of encouraging children and parents. Public schools are becoming a medium of other types of inferiority, not only in terms of language but also in terms of resources. If the soil of hatred and inferiority will be filled in children at the foundation level, then how will the building be constructed? We have to get out of Macaulay's educational thought thinking, only then can the educational problem be solved. It would be better to compare the quality of public and government schools. What is its purpose? What are his needs and needs? The purpose of primary education is the nutrition of globalization or to take the coming generations towards self-sufficiency and equality. It should be discussed publicly, today's education has become political, whereas education is not political and neither means to increase the product to meet the need. The government has a provision of nutrition for the government under the Primary Education Scheme under the primary education scheme, craftsmanship or work experience, mother tongue education, life-based education, education, free education and compulsory primary education, nutrition for children.

Privatization of Education

Today In the era of English language, the demand for English language is increasing day by day and parents are looking towards private schools to provide English education to their children. Local bodies are responsible for primary education. The privatization of education has freed the government from the responsibility of education, but on the other hand it has also got the freedom to make education of private institutions, which affects the quality of education. Currently there is a lack of good private institutions that affect the quality of education. Currently there is a lack of good private institutions which are successful on all standards of education. Except for some exceptions, most private schools have become centers to pass maternal examination. Neither eligible teachers are appointed here for economic benefits nor are the students being discharged towards education. Many Schools are such that untrained teachers are done teaching work and some teachers have zero. In such a situation, it cannot be possible to make education quality.

Responsibility of Education

Who has the responsibility of providing quality education to students ?, this question is unanswered, all of them put responsibility on each other on the question of quality. The parent is responsible for providing quality education to the child, who is expected to cooperate or the teacher who is the creator of the student's future or the student himself should be responsible or there is all the responsibility on the government itself, because that's that But there is a burden of providing necessary facilities of education.

Education can be made quality by ensuring the responsibility of all. Quality of primary education The biggest obstacle in maintaining is not a sense of responsibility. It is not appropriate to justify any one for education quality. Teachers, families, society and government all contribute to education in equally. Therefore, the quality of education can be established by awakening everyone towards responsibility.

Working of Rural Schools

How education is being provided in rural government schools. Are we considering the admission of children in school and mid-day food data as the success of education and have forgotten the quality of education in schools, is it just reading our own name and reading at the minimum level and solving the general questions of mathematics The qualification of education should be accepted. Data analysis It also shows that if basic skills are not learned well in the beginning, then they cannot be learned later. The reality of education system in government schools is that many children could not be educated even by being part of educational institute, which is a failure of our education system. In this way, children who could not be answered primary and secondary, can contribute to a good socialism nation. This is such a serious problem. Which can be resolved, provided we understand its seriousness, even our government should cooperate in its solution, no specialized face is associated with this problem and our alleged intellectual debate has become political and personal based. Because of this we more Do not care and the media also ignores it. In real form, it is the most important issue for society and nation. If the society and the government do not solve this problem in time, then in the next few years we will have millions of hungry and unemployed youth, who will neither have any qualification nor will there be any attitude from being educated about the world. To fulfil the dreams of good society and advanced nation, we have to improve rural education. There is improvement in the school system in the rural environment but it needs to be taken towards further improvement. Even if the students are enrolled in the school, there is a problem of students being absent in the school. Other than this Due to the uneducated and less educated and less educated of the parents, he feels ashamed to come to school. This problem can be resolved through community awareness. Therefore, from time to time in the school, awareness related programs should be organized by the parents and the various programs being run by the government should be given to the parents, so that the gap of the school and the community can be eliminated.

Innovation in Education

To make education quality innovations are required for education. Child Parliament, innovative teaching, student profile, education with fun activities, community participation, simple English and Hindi medium and concept mapping etc. are mean. Innovation is to bring quality in education by using maximum resources available in the school at the least cost. Eligible Establishing a cordial relationship between the teacher and the student, the creation of creativity among the students and motivating the students to maximize by making education interesting and simple. The subject matter prevalent in the primary level is unable to induce students to learn. The reason for this, using the old subject matter, has not yet ensured any change, which is a major problem. Learning and cultural activities in the school are conducted under the guidance of the teacher, but if the students have to develop leadership skills, qualified citizens and all solutions skills, then they should give an opportunity to do all these activities themselves. The most suitable platform for this is Children's Parliament. Due to this, students continue to be active in the teaching process and that problem They are able to solve themselves. Naturally, students' life is for sports, the activities of students depend on their surroundings and daily. If subjects

like Mathematics and Science are read in sports, then they can easily learn and assimilate these subjects. This will increase the concentration of students and the teaching process through sports will also make employment and simple. There is a need to include the latest approach in the course to remove the disrespect of students' anorexia and text book. The acting teaching method can play an important role in this situation. It generates interest in education among students. During the recitation of mathematics, students sit in two classes In order of equal number and girls can be seated in order of odd number. With this, knowledge of numbers can be easily made to students and the interest of the students towards the subject matter is also maintained. Child newspaper plays an important role in students to get acquainted with the situation in the country and abroad. Through this, Pathan and writing skills develop. Which instills help and confidence in reading and writing of weak students. There are many such subject matter in schools, which cannot be easily remembered. For example, science can be used to read it to read it. It literally means the main symbolic Conceptual reserve is canceled through words. This is the best method for students.

Conclusion

If you want the progress and development of the nation, then you have to accept the changing nature of education. He will have to provide education according to his interest of the child. If the quality level of primary education is not improved, then we will have the army and nation behind in this era of unqualified and unemployed youth. School education has to be developed in such a way that it creates internal and psychological approaches in the student. At present, the concept of a normal person has become that students of primary school run by the government will never reach the rise of advanced. We have the responsibility to overcome this confusion Will have to take. We have to be a good leader. Reviews and suggestions should be taken from time to time of educational schemes being run by the government. In order to improve innovation and quality in the education system, teacher can play the most important role in training, model schools, innovation, availability of qualified teachers and system for teaching work and increasing the quality of education.

References

1. Madan Mohan and Malti Saraswat, Development and problems of Indian Education.
2. Tyagi Gurusaran Das, landscape of Indian Education.
3. Agrawal J.C., Primary Education in India.
4. Mishra Girishwar, Review of social responsibility, Aap ki Bat.
5. Dr. Srivastava Praveen Chandra, Fundamentals of elementary education.
6. Singh Jagdamba, Justification for the impact of privatization in the field of education.
7. Agnihotri and others 2014.
8. Arvindo society 2018.
9. Mangal and others 2015.
10. Birbili 2007.